पलायन की विभीषिका का विहंगावलोकन : ऋणजल-धनजल के परिप्रेक्ष्य में

शोधार्थी

दीक्षा सिंह

हिंदी विभाग

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,

सिद्धार्थनगर

शोध निर्देशक

डॉ० जय सिंह यादव

हिंदी विभाग

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,

सिद्धार्थनगर

शोध सारांश-

यह सर्व विदित है की जब भी महामारी या कोई भी बीमारी आती है तो कहीं-न-कहीं विस्थापन जैसे स्थिति उत्पन्न होती है | ठीक उसी प्रकार जब भी बाढ़, सूखा एवं भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएं आती है तो भी एक बड़े स्तर पर विस्थापन का होना सम्भव है | रेणु जी के बहुत से ऐसे रिपोर्ताज है जिनमें इन्होनें विस्थापन संबंधी समस्याओं को उजागर किया है जैसे हड्डीयों का पुल, जै गंगा, भूमिदर्शन की भूमिका, पटना जलप्रलय, पुरानी कहानी : नया पाठ, डायन कोशी आदि | जिसमें लोग बाढ़ एवं सूखा जैसी आपदा से परेशान होकर मृत्यु के ग्रास में समा जाते है और स्थिति यह हो जाती है कि उन्हें जिन्दा रहने के लिए जीव-जंतुओं की लाशों का सहारा लेना पड़ता है | भला इससे बड़ा दुःख और क्या हो सकता है | सर्वप्रथम हम यह जानते की आखिर विस्थापन होता क्या है ? विस्थापन का सामान्य अर्थ है, किसी व्यक्ति या समुदाय को उनके मूल स्थान से जबरन निकाल देना | विस्थापन जैसी समस्या का सामना अधिकतर आदिवासी समुदाय एवं गरीब जनता को ही करना पड़ता है | देखा जाए तो विस्थापन जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, संस्कृति, परम्परा आदि को भी प्रभावित करता है | विस्थापन का मानव जीवन एवं मानव मूल्यों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है | विस्थापन कई प्रकार से हो सकता है जैसे शरणार्थी- ये वे लोग होते है जिन्हे मजबूर होकर किसी न किसी कारणवश अपनी भूमि या देश छोड़कर किसी अन्य देश या स्थान में जाकर शरण लेनी पड़ती है, इन्हे ही शरणार्थी कहते है | दूसरा विस्थापन है - स्वतंत्र विस्थापन : इस विस्थापन में लोग अपनी इच्छानुसार रोजगार के लिए, पढ़ाई के लिए या व्यवसाय के लिए अपने देश को छोड़कर दूसरे देशों में जाकर निवास करे हैं, उसे ही स्वतंत्र विस्थापन कहते है | तीसरा विस्थापन है- आपराधिक विस्थापन : यह विस्थापन तब होता हो जब किसी व्यक्ति को अपराधी होने कि सजा के तौर पर उन्हें देश से निष्कासित कर दिया जाता है | वर्तमान में विस्थापितों के लिए देश एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संगठन कार्यरत है | विस्थापन मनुष्य की सम्पूर्ण जीवन शैली को बदल कर रख देता है | विस्थापन के कारण लोगों से सिर्फ उनकी भूमि ही नहीं छीनी जाती बल्कि उनका सम्पूर्ण अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है |

की वर्ड्स : **विस्थापन, महामारी, भूमिदर्शन, जलप्रलय, ड्राउट, कंजक्टिवाइटिस, रिलीफ, विसंगतियों, शरणार्थी |**

हमे यह भलीभांति विदित है, की जब भी कोई महामारी यह प्राकृतिक आपदा आती है तो निश्चित ही विस्थापन का रूप उभरकर हमारे सामने आता है | कुछ समय पश्चात्त यह बहुत ही बड़े रूप में फ़ैल कर एक बड़ी जनसंख्या को अपनी चपेट में ले लेता है | लोगो को अपना गाँव, घर, जमीन, जंगल आदि छोड़कर दूसरे स्थानों पर आश्रय लेना पड़ता है, जिसे हम विस्थापन कह सकते है | विस्थापन एक ऐसा दंश है जिसका दुःख हमे जीवन भर झेलना पड़ता है | विस्थापान के कारण मानव मूल्यों का हनन होता है, यह एक ऐसी समस्या है जो वर्तमान में तीव्र गति से अपने चारों ओर अपने पैर पसार रही है | विस्थापन से हो रही समस्या के समाधान के लिए देश एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा अनेक संगठन कार्यों में लगे हुए है जैसे- विस्थापित लोगों के लिए पुनर्वास एवं पुनर्स्थापना की व्यवस्था, विस्थापितों के लिए आश्रय और अनेक प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध करना तथा विस्थापन के अन्य कारणों को समाप्त करने का प्रयास करना | वर्तमान में विस्थापन के अनेक कारण है जैसे- प्राकृतिक आपदाओं के कारण विस्थापन, राजनीतिक उत्पीड़न के कारण विस्थापन, आर्थिक संकट, युद्ध एवं संघर्ष, अराजकता, सामाजिक एवं धार्मिक भेदभाव एवं वर्तमान में चल रही अनेक बड़ी-बड़ी परियोजनाएं जैसे- बड़े-बड़े बांध, सड़के, पुलों का निर्माण, बड़ी- बड़ी, रेलवे ट्रैक, कम्पनियो का निर्माण एवं अन्य बड़ी-बड़ी इमारतें आदि जिनके निर्माण के लिए बड़ी भूमि की आवश्यकता होती है | जिसके चलते लोगों को जबरन उनके स्थान से विकास के नाम पर हटा दिया जाता है इसके बदले उनसे पुनर्वास एवं उचित कीमत देने की बात की जाती है | परन्तु यह मात्र छलावा होता है | इस विस्थापन को समझने हेतु हम यहाँ रेणु जी के रिपोर्ताज संग्रह ऋणजल-धनजल के विषय में अध्ययन करेंगे | रेणु जी के इस रिपोर्ताज को हम एक भावनात्मक वृतांत के रूप में देख सकते है, जिसमे 1966 ई. में बिहार में पड़े सूखे एवं 1975 ई. में आयी भयानक बाढ़ का बड़ा ही भयावह वर्णन किया गया है | जिसमे लेखक द्वारा बाढ़ एवं सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा के दौरान उत्पन्न पीड़ा एवं दुःख का बड़ा ही मार्मिक दृश्य उजागर किया है | लेखक ने आहत होकर इन दोनों ही आपदाओं में लोगों को होने वाले दुःख, दर्द, पीड़ा, दरिद्रता एवं उनकी तकलीफ का वर्णन किया है उन्होंने यहां पर दिखाया कि किस प्रकार सूखा एवं बाढ़ जैसी स्थिति में लोगो की जीवन शैली पूरी तरह बदल जाती है और उनकी आजीविका खतरे में पड़ जाती है | बाढ़ के दौरान पूरा शहर जलमग्न होने पर किस प्रकार लोगों को अपने घरो से विस्थापित होना पड़ा | ऋणजल-धनजल रेणु जी का एक सफल संस्मरणात्मक रिपोर्ताज है | इसमें ऋणजल से तात्पर्य है : जल कि कमी अर्थात सूखा से एवं धनजल से तात्पर्य है जल कि अधिकता से अर्थात बाढ़ से |

फणीश्वरनाथ रेणु जी का रिपोर्ताज भूमिदर्शन की भूमिका इस रिपोर्ताज का प्रकाशन 1966 ई. में हुआ | यह ऋणजल-धनजल रिपोर्ताज संग्रह में संकलित है तथा यह दिनमान पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित होता था | जिसमे दक्षिण बिहार में पड़े अकाल से दुखी व पीड़ित लोगों की दशा का वर्णन किया गया है | इसके साथ ही सरकार द्वारा बनाये गए भ्रष्ट तंत्र की ओर भी इशारा किया गया है | इस अकाल के दौरान ऐसी भयावह स्थिति उत्पन्न हो गयी कि मानवता तक कि धज्जियाँ उड़ गयीं थी | जहाँ गरीब लोग भुखमरी के कारण मृत्यु का शिकार बन रहे थे, वहीं अमीर और जमींदार लोग पकवान बना-बनाकर अपना पेट भर रहे थे | वर्तमान में जिस कोरोना नामक वायरस ने पूरे विश्व को हिला कर रख दिया | जिसके चलते यह दशा उत्पन्न हो गयी कि लोगों से उनका

रोजगार छीन गया, लोग सड़कों पर आ गए, गरीब दिन पर दिन गरीब और अमीर दिन पर दिन अमीर होते चले गए | दिन-पर-दिन अर्थव्यवस्था ऊँचाई पर जाने की बजाय गर्त की ओर बढ़ रही है | हम देख सकते है कि प्रतिदिन अखबारों में डेमोक्रेसी, चोरी, भ्रष्टाचार, रेल-दुर्घटना, चाइना, कर्फ़ू, बाढ़, सूखा व भूकंप एवं महामारी जैसी मानवीय व प्राकृतिक आपदाएं जैसी खबरे निकलती रहती है | वर्तमान में ये सभी शब्द बहुत सामान हो गए है मानों इनके बिना तो कोई कार्य ही नहीं चलता हो | लेखक देखता है कि सूखा पड़ जाने के कारण बाजार में सभी चीजों के दाम आसमान छू रहे थे, यह सब देख कर लेखक हतप्रभ हो जाता है और सड़को पर सूखा देखने के लिए निकलता है | तभी एक सब्जी वाले ने जिसका नाम नाम नगीना राम था हँसते हुए कहा, ''सूखा नहीं, हुजूर, बाढ़! बाहर से पाँच हजार 'बाबू लोग' पटना आये हुए हैं | गर्दनीबाग, आर ब्लॉक से शुरू करके भिखना पहाड़ी तक के सभी होटलों में जाकर देखिए- एक भी कुर्सी खाली नहीं मिलेगी आपको |''[7] बिहार में पड़े इस अकाल में होटलों का अकाल पड़ गया था जिसका वर्णन होटल का मैनेजर करता है - ''तंदूरी क्या, कोई भी चिकन नहीं | डेढ़ सौ मुर्गियों के आर्डर तो रोज 'उधर' से यानि बहार से मिलते हैं .... प्लीज वेट टिल टवेटी फिक्थ |''[8] वह कहता है ''रोज दिल्ली अर्थात केंद्र से कोई-न-कोई 'अन्नदाता' उड़कर आता है 'ड्राउट' देखने | (छत्तर का मेला हो गया है यह ड्राउट!) रोज राज्य का कोई-न-कोई मालिक (बड़ा, छोटा, मँझला, सँझला, पाँच, छठ, सत्तो...मालिकों का अकाल है यहाँ? एक पर एक मालिक हैं) 'भयानक' और 'भीषण' बयान दे डालता है, केंद्र के अन्नदाता कहते हैं, पहले उन चूहों का अंत करो जो अन्न वस्त्र को नहीं-सारे राज्य की जनता की आत्मा को कुतर रहर हैं |''[9]

भला प्रकृति के प्रकोप से आज तक कौन बच सका है | जब भी बाढ़ जैसी आपदा आती है न जाने कितने ही घरों को तबाह कर जाती है, आमतौर पर देखा जाये तो भारत में लगभग हर वर्ष कई राज्यों को बाढ़ व सूखा जैसी आपदाओं का सामना करना पड़ता है | लाखो लोग मारे जाते है, आज तक इस समस्या का समाधान नहीं निकल पाया | वे कहते हैं, जय प्रकाश नारायण के पास कोई काम तो है नहीं | वे कभी भूटान तो कभी नागालैंड और कभी कश्मीर इसके साथ ही कभी तो भूदान जैसी बेबाक बातों पर बात करते हैं |'ड्राउट' देखने दिनमान पत्रिका के सम्पादक, क्रान्तिकारी, कवि, उपन्यासकार एवं चिंतक अज्ञेय जी आ रहे हैं | जो कि इस अकाल यानि सूखा पड़ने के कारण भूख से मरने वाले और पीड़ित लोगों का साक्षात्कार करेंगे | मुझे ऐसा लगा था कि वे सबसे पहले बिहार राज्य के मुख्यमंत्री से मिलेंगे और फिर कृषिमंत्री से ततपश्चात हवाई जहाज पर यात्रा करके सूखा प्रभावित क्षेत्रों में जायेंगे | परन्तु ऐसा नहीं हुआ इस श्रेणी में सबसे ऊपर जय प्रकाश नारायण का नाम था जो एक दिन पहले ही पटना से गया जा चुके थे |

तत्पश्चात वे बोधगया जाने का निश्चय करते हैं ''कवि मित्र के कथानुसार बोधगया के रास्ते में ही कोख-जली धरती की पहली झलक मिल जाएगी |''[10] जाने से पूर्व वहाँ की जानकारी किसी अधिकारी से ले लेना उचित है | वहाँ पहुँचने के पश्चात सभी ने मिलकर दर्शन किये | गया से होते हुए हम नवादा की ओर चले और वहाँ के गावों और सड़कों के विषय में बात करने का अवसर मिला, कि इसी मार्ग से बुद्ध भी गए होंगे और इसी प्रकार कि बहुत सी बातें कि ''अचानक सड़क कके दोनों ओर का भू-भाग-लैंडस्केप-सपाट, सू-खा-आ-आ !!-यह क्या? जहाँ तक दृष्टि जाती है- एक तृण नहीं | कहीं एक तिनका भी हरा नहीं | बंजर-परती धरती नहीं... धान के खेत हजारों एकड़

| प्रकृति के प्रकोप की मारी धरती! -यह क्या देख रहा हूँ? यह किसका शाप है?... किसका पाप...?''[11] लौटते वक्त हमारी आँखें कोसला गाँव की ओर पड़ती हैं, वह कहता है न जाने हम यह कहाँ आ गए, यह कौन सी जगह है, मैं दोबारा यह कभी नहीं आऊंगा सभी घूर-घूर कर देख रहे थे, यदि वहाँ की औरते हमें गलियां देकर, मार-मार कर भी भगाती तो भी हम कुछ न कह पाते क्योंकि हमारे पेट तो भरे हुए थे, तन ढकने के लिए जरूरत से जादा कपड़े थे | भला हमसे बड़ा अपराधी कौन होगा | तभी आगे चलकर वे नवादा के एस.डी.ओ. के बंगले पर पहुँचते है, उस समय वे नामज पढ़ रहे थे, और हम बैठ कर उनका इंतजार कर रहे थे तभी वे आकर पूछते है आपलोग कौन है और यहाँ कैसे तभी जितेंद्र बोल पड़े हम यहाँ सूखा प्रभावित क्षेत्र में घूमे आये है इस पर वे बोले ''ओ-ो-ो! मैंने समझा की आपलोग कोई रिलीफ देने आए हैं |... खैर! तो, महाशय रिलीफ यानी 'सहाय' का काम देखने के लिए तो... और हाँ, 'रिलीफ' का क्या मतलब समझते हो, आप? सहायता? जी नहीं! गलत! रिलीफ का सही माने है 'स-हा-य'! ... समझा? ... ''[12] जबकि नवादा के एस.डी.ओ. अब्दुल खैर का अकाल से कोई लेना देना नहीं था | सरकार द्वारा प्रत्येक दिन यही घोषणा की जाती है कि लोग भूंख से नहीं मर रहे है | इसी प्रकार पूर्णिया के भागलपुर में 1949 में कुछ इलाकों में अकाल पड़ा, चारों ओर हाहाकार मच गया | सभी बड़े किसानों और जमीदारों ने अपने अनाज छिपा दिए | आये दिन अकाल की समस्या से निपटने के लिए किसान और मजदूरों द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा था | वहीं 24 जुलाई, 1966 को सुखाड़ी महतो ने भूंख-प्यास से डाल्टनगंज में दम तोड़कर भुकमरी की घोषणा कर दी | 26 जुलाई को सुखदयाली भूइयाँ | 27 को जित्तन भूइयाँ |''[13]

रेणु का यह रिपोर्ताज नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' की याद दिलाता है –

''कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक की कुटिया बैठी उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूल्हों की हालत रही शिकस्त |''[14]

परन्तु 1952 के इस अकाल से निश्चित ही 1966 का अकाल बहुत भीषण था | जिसमे कई दिनों तक चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया, छिपकली और चूहों की हालत खराब रहती है |

रेणु जी लिखते है -''उफ। ...! बहुत जल्दी ही इन पूँजीपतियों के घर में नेपाल राज्य बंधक पद जायेगा | बस, आप निराश हो गए? मैं कहता हूँ, सुनिए -शीघ्र ही यहाँ जबरदस्त क्रांति होगी और सफल क्रांति होगी | निरंकुश शासकों के साथ-साथ इन पूँजीपतियों के गठबंधन ने कोढ़ में खाज का काम किया है | नेपाल के चैतन्य समाज की आँखें खुल चुकी हैं |''[15] यह स्थिति हो गयी थी की भूंख से प्रत्येक दिन कई लोगों को अपनी जान गवानी पड़ती थी | और लोग मर भी जाये तो उससे क्या फर्क पड़ता है | जमीदारों और सरकार को तो अपनी जेब भरनी है | ये गरीब और मजदूरों को कीड़े-मकोड़े समझते है उन्हें किसी की जान की कोई परवाह नहीं |

फणीश्वरनाथ रेणु जी का रिपोर्ताज पटना जलप्रलय इस रिपोर्ताज में 1975 ई. में पटना में आयी बाढ़ का बड़ा ही भयावह रूप उकेरा गया है, जिसका प्रकाशन 1975 में 'दिनमान' साप्ताहिक पत्रिका में कुल चार भागो में हुआ | जिसमे पाँच अपख्यान इस प्रकार है -1. पंछी की लाश 2. कुत्ते की आवाज 3. जो बोले सो निहाल 4. कलाकारों की रिलीफ पार्टी 5. मानुष बने रहो | इसमें बाढ़ जैसी आपदा से पड़े अकाल का बड़ा ही दुखद और निराशापूर्ण वर्णन किया है | साथ ही राजनैतिक कार्यकर्ताओं के मुख पर लगे मुखौटे पर तीखा व्यंग्य प्रहार किया गया है | इन राजनेताओं के लिए गरीबी, दुःख व यातनाओं का कोई मोल नहीं है | सभी लोग मिलाकर गरीब जनता का शोषण कर रहे है और हमेसा से करते आये है | गरीब और मजदूर सदैव से ही दोनों पतों की बीच पिसता आया है, एक ओर बाढ़ जैसी आपदा तो दूसरी ओर राजनीतिज्ञों द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किया हु अत्याचार | पटना में आयी इस तबाही को रेणु जी ने स्वयं अपनी आँखों से देखा था एवं उस समय की कठिन परिस्थितियों व विपत्तियों को भोगा था | काफी समय तक लगातार तीव्र वर्षा के कारण पटना शहर में धीरे-धीरे पानी का भराव होने लगा और अंत तक यह पानी बाढ़ के रूप में परिवर्तित हो गया | इस बाढ़ में औरतों का सुहाग मिट गया | ऐसा माना जाता है की आने वाली आपदा की आशंका कुत्तों को पहले ही हो जाती है तो यहाँ पर भी बाढ़ की आशंका होने पर कुत्तें रोना शुरू कर देते है | कुत्ते मनुष्यों को आने वाली आपदा के प्रति सचेत कर रहे थे, चारों तरफ दुःख और निराशा का करुण स्वर गूंज रहा था | यह दृश्य देखकर रेणु जी को अपने बीते समय की याद आ गयी और वह अपनी ही स्मृतियों में कहीं खो जाते है | जँहा वे अपने गुरु सतीनाथ भादुडी के साथ मिलकर बाढ़ से पीड़ितों की सहायता करते है | उन्हें 1947 में आयी पूर्णिया जिले की बाढ़ की याद आती है इसी क्रम में 1949 में महानंदा में आयी बाढ़ को याद करते हुए वे सोचते है कि किस प्रकार लोग भूँखे,प्यासे, नंगे और कीचड़ में लथपथ अपनी लोक संस्कृति में लीं होकर मग्न हो रहे थे लेखक सोचता है ''हम रिलीफ बांटकर भी ऐसी हंसी उन्हें दे सकेंगे क्या !'' इसी क्रम में लेखक को 1937 और 1967 में आयी शंकरपुर और पुनपुन नदी में आयी बाढ़ की याद आती है, जिसमे पूरा का पूरा नगर डूब गया था | वे इस बात को भी याद करते है कि इस भीषण बाढ़ के समय में भी लोग अमीरी-गरीबी का भेदभाव रखते है | इस कारण उन पीड़ितों तक जो सहायता पहुंचनी चाहिए वह नहीं पहुँच पाती है, यदि पहुंचती भी है तो उसकी मात्रा इतनी कम होती है की वह न के बराबर होती है और गुणवत्ता का तो कहना ही क्या | किन्तु बचाव के नाम से लोगों से पैसा लेकर कैसे बड़े-बड़े अफसर अपनी जेबे भरते है | ''क्या तमाशा है! फिर, पीक थूककर चालू हो गए – एज एफ वी आर लेबरर ... तमाशा है...दिल्ली का ब्रेड कहाँ है? बतलाइए | बटर, केक, चीज कुछ भी नहीं सिर्फ चूड़ा-चना-फहरी ... |''16

यहाँ पर रेणु जी के कहने का तात्पर्य यह है कि जो सरकारी अफसर सुर्ख़ियों में बने रहने के लिए टी.वी. और रेडियो पर बड़ी-बड़ी बाते और वादे कर रही है क्या वह सही है? क्यूंकि न ही उन तक जरूरत के हिसाब से खाना पहुंचता है, न दवा, न ही कपड़े और न ही अन्य कोई जरूरत का सामान |अट्ठारह घंटे बीतने के बाद भी वहाँ पर सरकार द्वारा कोई भी राहत नहीं पहुंचाई गयी, जबकि वहाँ मौजूद रिक्शे वाले, रद्दी वाले, भिखारी आदि बाढ़ में फंसे लोगों को राहत पहुँचाने का अथक प्रयास कर रहे थे,लोगों तक उनकी जरूरत का सामान पहुंचा रहे थे, जिनमे कुछ सरदार भी शामिल थे तभी यह भाव देखकर लेखक अचानक ही बोल पड़ता है ''जो बोले सो निहाल सात सीरी अकाल |''

रेडिओ में लगातार समाचार चल रहे थे कि ‘’पटना की बाढ़ की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है | पिछले घंटे से पटना का सम्पर्क देश के शेष भागों से कटा हुआ है | दूरसंचार के सभी साधन भंग हो गए हैं | गाड़ियों का आना-जाना बंद है, क्योंकि पटना जंक्शन रेलवे स्टेशन की रेल पटरियां पानी में डूब गयी हैं | आज एयर इंडिया का विमान पटना हवाई अड्डे पर नहीं उतर सका... |''

रात होने पर कुत्तों की आवाजे ऐसी डरावनी लगती थी मानों साक्षात्कार मौत लीलने के लिए जिह्वा पसार कर खड़ी हो | उसी समय फिर से तेज बारिश आ जाती है | तभी अचानक लेखक को एक पंक्ति याद आ जाती है ''तुम ही क्यों बाकी रहोगे आसमां! कहर बरसाकर शहर पर देख लो |'' उस समय दशा यह थी की लोगों को जिन्दा रहने के लिए मृत जंतुओं का सहारा ले रहे थे, उन्हें खाकर अपनी भूंख शांत करते थे | उस बाढ़ में फंसे हुए लोगों के लिए सूअर और मुर्गी जैसी जीव की लाशें मनो उपभोग की वस्तु बन गयी हों | इसके विपरीत आकाशवाणी के माध्यम से लगातार लोगों तक यह झूटी खबर पहुंचाई जा रही थी कि सेना द्वारा बाढ़ में फंसे लोगो को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा है और उन्हें भोजन की उचित व्यवस्था उपलब्ध करायी जा रही हो | पर सुच तो यह है की वहां फंसे लोगों को दो दिन से कुछ भी नहीं मिला है | अख़बार में यह देखने को मिला कि ‘’दिल्ली से इतने हजार किलोग्राम मॉडर्न रोटी आ रही है | दिल्ली वालों के दैनिक राशन में रोटी की कटौती : विदेश से 'केक' और 'चीज' भी : आगरे के पेठे ;कलकत्ते से भी रोटियां : प्राण रक्षक दवाइयां ओर कपड़े |'' परन्तु जो गरीब और मजदूर वर्ग ले लोग थे उन्हें तो चुरा, भुने चने, दालमोट आदि दिया जाता था और उसी स्थान पर शहरी और अमीर लोगों को ब्रेड-बटर-चीज इत्यादि मुहैया कराया जाता था | गरीब जनता सरकार व नेताओं को नजरो में कीड़े-मकोड़े तुल्य थी जिनका उनके लिए कोई मोल नहीं था | एक ओर तो सरकार- ''गुरु-गौरव गर्जन के साथ ऊपर से करुणा और दया... (बरसा रही थी) | दूसरी ओर स्वयंसेवी संस्थाएं चुपचाप ट्रकों, नावों और ठेलो पर खिचड़ी,चावल, रोटी, दूध,नमक, पानी, मोमबत्ती, दियासलाई, कपड़े और दवाइयां-स्लम तथा गरीब मुहल्लों में बाँट रही थी |'' लगातार सरकार द्वारा लोगो को झूठी उम्मीदें और आशाएं बंधाई जा रही थी | इसी से आहत होकर रेणु जी लिखते है ''रोज-रोज कोई-न-कोई नई राहत की घोषणा होती रहती है | प्रत्येक कार्ड होल्डर को पाँच किलो गेंहू मुफ्त: रिक्शा चालकों को भी | पाँच किलो अनाज मुफ्त में मिलेगा | सरकारी कर्मचारियों को पंद्रह दिनों का वेतन अग्रिम मिलेगा | सिर्फ पंद्रह ही दिनों का नही... पुनर्विचार के बाद फैसला लिया गया है | एक महीने का वेतन बतौर अग्रिम मिलेग, जिसका भुगतान बाद में धीरे-धीरे किया जा सकेगा | सेना के सभी अंग राहत में लगे हुए है | जलसेना (नेवी) को भी सतर्क और तैयार रहने का आदेश दिया गया है | बी.एस.एफ. के जवान डॉक्टरों को लेकर संक्रामक रोगों से बचने के लिए लोगों को टीके...| और एम्फीबियन (मेढ़क गाड़ी) आ रही है जो जल और थल में समान रूप से दौड़ेगी...|'' इस बाढ़ के पश्चात रेणु इतने हतप्रभ और दुखी हो गए थे की उन्हें पूरा पटना शहर ही बीमार और पीड़ित दिखाई दे रहा था | आगे उन्ही के शब्दों में ''इसके एक बांह में हैजे की सुई का और दूसरी में टाइफाइएड के टीके का घाव हो गया है | पेट से 'टेप' करके जलोदर का पानी निकाला जा रहा है | आँखें जो कंजक्टिवाइटिस (जोय बांग्ला) से लाल हुई थीं- तरह-तरह की नकली दवाओं के प्रयोग के कारण क्षीण ज्योति हो गयी हैं | कान तो एकदम चौपट ही समझिए-हियरिंग रूडसे भी कोई फायदा नहीं | बस, 'आइरन लंग्स' अर्थात रिलीफ की सांस के भरोसे अस्पताल के बेड पर पड़ा हुआ

किसी तरह 'हुक-हुक' कर जी रहा है |'' इस रिपोर्ताज में रेनू जी ने व्यंग्य के साथ ही लोक कथाओं का भी भरपूर प्रयोग किया है | इसके साथ ही प्रतीकों, बिम्बों व आंचलिक शब्दावलियों का भी प्रयोग रिपोर्ताज में आवश्यकतानुसार किया गया है | जिससे की पाठों की रूचि बनी रहती है | हम भारतीय ऐसे है चाहे कोई भी बड़ी-से-बड़ी मुसीबत आ जाये कुछ न कुछ करके हम उसमे भी मुस्कुराने की वजह और मौके ढूंढ ही लेते है | रेणु जी ने अपने रिपोर्ताज में सामाजिक विसंगतियों, सामाजिक कुरीतियों एवं सरकार द्वारा बनाये भ्रष्ट तंत्र पर बहुत ही तीखा व करारा व्यंग करते है | रेणु जी ने अपनी भाषा में भी देशज, विदेशी आदि शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है | इसमें इन्होने फ़्लैश बैक शैली का प्रयोग किया है |

रेणु जी के प्रत्येक रिपोर्ताज में सिर्फ बाढ़ या सूखे के विषय में ही नहीं बल्कि इसमें सम्पूर्ण जीवन का चित्रण किया जाता है | इसमें सामान्य जनता की परेशानियों उनके दुखों एवं राजनीतिज्ञों, समाजिक कार्यकर्ताओं व सरकारों के मुख पर पड़े झूट के मुखौटे को उतार कर फेका है तथा करारा प्रहार किया है | रेणु जी के रिपोर्ताज में भारत देश की अर्थव्यवस्था के साथ आजादी के बाद भारत की यथार्थ का चित्रण किया है | भारत देश की आधे से अधिक जनता गावों में निवास करती है तथा कृषि पर आधारित है | और यहाँ पर बाढ़ एवं सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाओं का खतरा हमेशा ही बना रहता है | जिस कारण किसानों की फसल पूरी तरह नष्ट हो जाती है | दशा यह हो जाती है की गरीबों के पास खाने को भोजन नहीं, पहनने को कपड़े नहीं, करने के लिए कोई काम नहीं सब बेरोजगारों की तरह कष्ट में अपना जीवन बिताते है | यह सब देखकर रेणु जी को बड़ा दुख होता है | रेणु के संबंध में चितरंजन भर्ती लिखते हैं ''रेणु की रचनाओं के अध्ययन-मनन के दौरान संवेदन मन एक तरफ संतप्त होता है, तो दूसरी तरफ संतृप्त भी होता है | ठीक है कि उन पर आंचलिकता का ठप्पा लगा, मगर वह एक अंचल विशेष की बात करते हैं | उनकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश मुखर है | मगर उन्होंने शहरों को अनदेखा किया, ऐसा नहीं कहा जा सकता | दरअसल, जब वह पटना में होते हैं, तो पटना उन्हें खींच रहा होता है | उनके विशाल परिवार, गाँव आदि, जिसका एक छोर बंगाल से जुडा है तिस पर उनका विद्रोही तेवर, जो कभी ब्रिटिश साम्राज्य से,तो कभी नेपाली राजशाही से टकराने का हौसला देता रहा | और यही हिम्मत और हौसला कहें कि वह भारतीय कांग्रेसी सत्ता का लाभ ले रहे और आपातकाल को अनुशासन पर्व कहने वालों के विपरीत उससे जा टकराए |'' इस रिपोर्ताज में लेखक ने स्वयं के अनुभव एवं आँखों देखी और उस झेली हुई परिस्थिति का तथा उस दौरान घटित घटनाओं का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है | लेखक ने यहाँ पर अपनी विशेष शैली द्वारा घटनाओं को इस प्रकार वर्णित किया कि पाठक को ऐसा महसूस होता है जैसे वे स्वयं उस स्थिति में है | यह रिपोर्ताज प्राकृतिक आपदाओं के दौरान लोगों को होने वाली पीड़ा एवं उनके दुःख को उजागर करता है, जिसमे यह पूरी तरह सफल हुआ दिखाई पड़ता है | यह रिपोर्ताज अपनी भावभूमि पर पूर्ण रूप से खरा उतरता है |

संदर्भ सूची -

1. रेणु रचनावली, भाग-4, भारत, यायावर (सम्पादक), सम्पादकीय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-इलाहाबाद-पटना, तीसरा संकरण, सन 2007 ई., पृ. सं. -64, 158
2. रेणु, फणीश्वरनाथ, ऋणजल-धनजल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. -78
3. रेणु रचनावली, भाग-4, भारत, यायावर (सम्पादक), सम्पादकीय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-इलाहाबाद-पटना, तीसरा संकरण, सन 2007 ई., पृ. सं. -158,
4. रेणु, फणीश्वरनाथ, ऋणजल-धनजल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. -87, 89
5. रेणु रचनावली, भाग-4, भारत, यायावर (सम्पादक), सम्पादकीय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-इलाहाबाद-पटना, तीसरा संकरण, सन 2007 ई., पृ. सं. -173, 183
6. नागार्जुन रचनावली, भाग-1, सम्पादक-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली-पटना, पहला संस्करण, सन 2023 ई., पृ.स.- 170
7. रेणु फणीश्वरनाथ, (2002). समय की शिला पर, नयी दिल्ली ; राजकमल प्रकाशन, पृ. स. -24
8. रेणु रचनावली, भाग-4, भारत, यायावर (सम्पादक), सम्पादकीय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-इलाहाबाद-पटना, तीसरा संकरण, सन 2007 ई., पृ. सं. – 256, 363, 265
9. रेणु फणीश्वरनाथ, (2002). समय की शिला पर, नयी दिल्ली ; राजकमल प्रकाशन, पृ. स.- 307
10. रेणु रचनावली, भाग-4, भारत, यायावर (सम्पादक), सम्पादकीय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-इलाहाबाद-पटना, तीसरा संकरण, सन 2007 ई., पृ. सं. – 281, 284, 290, 294
11. चितरंजन भारती : 'रेणु का कथा संसार', मधुमती (वर्ष 61,अंक 3), मार्च,2021, पृ. – 65